Roza e Rasool Ke bare Me Dilchasp Maloomaat (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब

''आ़शिक़ाने रसूल की 130'' हिकायात से एक क़िस्त

हफ़्तावार रिसाला : 371
Weekly Booklet : 371

# रौज़ए रसूल

## के बारे में दिलचस्प मालूमात

जाली मुबारक की तारीख़ 07
गुम्बद शरीफ़ के मुख़्तलिफ़ रंग 14
सब्ज़ गुम्बद कब बना ? 13
मस्जिदे नबवी में कितनी मेहराबें हैं ? 20



शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

**नोट :** अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

---

## ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**रौज़ए रसूल के बारे में दिलचस्प मा'लूमात**"

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट** (दावते इस्लामी इन्डिया)
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।
MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# रौज़ए रसूल के बारे में दिलचस्प मा'लूमात[1]

**दुआए अ़त्तार :** **या अल्लाह करीम** ! जो कोई 25 सफ़्हात का रिसाला : **''रौज़ए रसूल के बारे में दिलचस्प मा'लूमात''** पढ़ या सुन ले उसे बार बार रौज़ए रसूल की बा अदब ह़ाज़िरी नसीब फ़रमा और उस को मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

## दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

**फ़रमाने आख़िरी नबी** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: बेशक अल्लाह** पाक ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की ताक़त दी है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है। कहता है, फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप पर इस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ा है।''

(مسند بزار، 4/255، حدیث:1425)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

**सब्ज़ सब्ज़** गुम्बद हर आंख का नूर और हर दिल का सुरूर है। हर आ़शिक़े रसूल इस बात का तमन्नाई होता है कि वोह जीते जी कम अज़ कम एक बार तो ज़रूर सब्ज़ सब्ज़ गुम्बदो मीनार के दीदारे

1... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब ''आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात'' सफ़्ह़ा 266 ता 294 से लिया गया है।

फ़रह़त आसार से शरफ़याब हो। **मदीनतुल मुनव्वरा** में सब से बा बरकत बल्कि रूए ज़मीन की अ़ज़ीम तरीन ज़ियारत गाह **रौज़ए रसूल** है। किसी आ़शिक़े रसूल ने कितना प्यारा शे'र रक़म किया है :

*ए 'ज़ाज़ येह ह़ासिल है तो ह़ासिल है ज़मीं को अफ़्लाक पे तो गुम्बदे ख़ज़रा नहीं कोई*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## सरवरे दो जहान का मकाने अ़र्श निशान

मस्जिदे नबवी शरीफ़ में मशरिक़ी जानिब वोह बुक़्अ़ए नूर वाक़ेअ़ है जहां मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जल्वागर हैं, येह वोही ह़ुजरए मुबारका है जिसे मस्जिदे नबवी शरीफ़ की पहली बार ता'मीर के वक़्त ही सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिहाइश के लिये तय्यार किया गया था और यहीं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا तक़रीबन 9 बरस तक अपने सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों में ह़ाज़िर रहीं, इसी बिना पर इसे ह़ुजरए आ़इशा भी कहते हैं। गारे और मिट्टी से बनी दीवारों और खजूर की टहनियों और पत्तों की छत पर मुश्तमिल मुख़्तसर रक़्बे का येह घर शायद उस वक़्त मदीनए मुनव्वरा की सादा तरीन इ़मारत थी। इस मकाने आ़लीशान की छत शरीफ़ की बुलन्दी क़दे आदम या'नी इन्सानी क़द से एक हाथ (या'नी तक़रीबन आधा गज़ ज़ियादा बुलन्द) थी। बा'द में इस के अत़राफ़ में ऐसे ही ह़ुजुराते मुबारका दीगर उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُنَّ के लिये यके बा'द दीगरे ता'मीर किये गए। ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहल्वी** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बा'ज़ मकानात ज़रीदे नख़्ल

या'नी खजूर की साफ़ टहनियों के थे, उन को कम्बल से ढांपा हुवा था और दरवाज़े पर भी कम्बल के पर्दे थे। तमाम मकानात क़िब्ले की त़रफ़ और मशरिक़ो शाम की जानिब थे, मग़रिब की सम्त कोई मकान न था। बा'ज़ मकान कच्ची ईंटों के भी थे। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 97) जिन आ़शिक़ाने रसूल को अपने मकान छोटे और तंग महसूस होते हैं उन को चाहिये कि सुल्त़ाने दो जहान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मकाने आ़लीशान पर ग़ौर कर के अपने लिये सब्रो तह़म्मुल का सामान करें।

*ख़ुसरवे कौनो मकां और तवाज़ोअ़ ऐसी हाथ तकिया है तेरा ख़ाक बिछौना तेरा*

(ज़ौक़े ना'त, स. 24)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## ह़ुजरए मुबारका में विसालो तदफ़ीन

ह़बीबे रब्बे जुल जलाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसी ह़ुजरए आ़इशा में ज़ाहिरी विसाल फ़रमाया, घर के जिस ह़िस्से में इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा वोही ह़िस्सए ज़मीन आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर बनने और जिस्मे मुनव्वर से लिपटने से मुशर्रफ़ हुवा। उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا अपनी वफ़ात शरीफ़ तक इसी ह़ुज़रए मुक़द्दसा में मुक़ीम रहीं।

## शैख़ैने करीमैन की ह़ुजरए मुत़ह्हरा में तदफ़ीन

मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه का जब वक़्ते रुख़्सत आया तो आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने **वसिय्यत** फ़रमाई कि मेरे जनाज़े को मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के पाक दर के सामने रख कर अ़र्ज़ करना : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ هٰذَا اَبُوْبَكْرٍ بِالْبَابِ

"**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अबू बक्र ह़ाज़िरे दरबार है।" अगर दरवाज़ए मुबारका ख़ुद ब ख़ुद खुल जाए तो अन्दर ले जाना वरना जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न कर देना। बा'दे रिह़लत ह़स्बे वसिय्यत रौज़ए अन्वर के सामने जनाज़ए मुबारका रख कर जूं ही अ़र्ज़ किया गया : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله ! अबू बक्र ह़ाज़िरे दरबार है।" **दरवाज़े का ताला ख़ुद ब ख़ुद खुल गया** और आवाज़ आने लगी : اَدْخِلُوا الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْبِ فَاِنَّ الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْبِ مُشْتَاقٌ दोस्त को दोस्त से मिला दो कि दोस्त को दोस्त का इश्तियाक़ (या'नी शौक़) है।" (تاریخ ابن عساکر، 30/436۔ تفسیر کبیر، 7/433) चुनान्चे आप رَضِیَ اللهُ عَنْه को हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पहलू (या'नी बराबर) में दफ़्न किया गया और क़ब्र इस त़रह़ खोदी गई कि आप رَضِیَ اللهُ عَنْه का मुबारक सर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक शानों (या'नी बरकत वाले कन्धों) के सामने आता था। फिर तक़रीबन 10 साल बा'द जब इमामुल आ़दिलीन, मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ عَنْه ने शहादत पाई तो आप رَضِیَ اللهُ عَنْه भी हुजरए मुत़ह्हरा के अन्दर ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه के पहलूए अन्वर में मदफ़ून हुए।

*या इलाही ! अज़ पए ह़ज़राते सिद्दीक़ो उ़मर ख़ैर दे दुन्या के अन्दर आख़िरत मह़मूद कर*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## हुजरए मुक़द्दसा दो ह़िस्सों में तक़्सीम था

तमाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मी जान, ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا का हुजरए मुबारका दो ह़िस्सों में मुन्क़सिम (या'नी तक़्सीम) था, एक वोह ह़िस्सा जहां क़ुबूरे मुबारका थीं और दुसरा वोह जहां आप رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की रिहाइश थी, दोनों ह़िस्सों के दरमियान एक

दीवार थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं अपने घर के उस हिस्से में जिस में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मेरे वालिदे माजिद (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ) आराम फ़रमा थे, इस हाल में दाख़िल हुवा करती थी कि पर्दे का कुछ ख़ास एहतिमाम न होता था, मैं कहती थी कि एक मेरे शौहरे नामदार हैं और दूसरे मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार। जब उन के साथ अमीरुल मुअमिनीन हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ दफ़्न हुए तो **अल्लाह** पाक की क़सम ! हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से हया की बिना पर इस तरह दाख़िल होती थी कि मैं ने अपने जिस्म को ख़ूब अच्छी तरह कपड़ों में लपेटा हुवा होता था। (مسند امام احمد، 10/12، حدیث:25718) मा'लूम हुवा कि उम्मुल मुअमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को इस अम्र में कोई शक न था कि दुन्या से पर्दा फ़रमा लेने के बा वुजूद भी साहिबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और प्यारे पिदर हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ अपने अपने रौज़ए अन्वर के अन्दर रहते हुए भी मुझे देख रहे हैं और येही अक़ीदा अमीरुल मुअमिनीन हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के बारे में था जभी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के रौज़ए अतहर में दफ़्न होने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا हाज़िरी देते वक़्त पर्दे का ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाया करती थीं। हालांकि क़ब्रों के पास इस तरह पर्दे का हुक्म नहीं है।

*मेरी मदनी बेटियां या रब्ब ! सभी पर्दा करें  सुन्नतों की ख़ूब ख़िदमत बहरे सिद्दीक़ा करें*

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

## शैख़ैने करीमैन के बा'द कोई यहां दफ़्न नहीं हुवा

शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا के बा'द हुजरए मुबारका में किसी और की तदफ़ीन नहीं हुई, ज़ुन्नूरैन, जामेउल कुरआन मुसल्मानों के

तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शहादत अगर्चे **मदीनतुल मुनव्वरा** में हुई लेकिन एक फ़सादी गिरोह ने हुजरए पाक के अन्दर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की तदफ़ीन नहीं होने दी चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किया गया । जब कि मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शहादत **मदीनए मुनव्वरा** से बहुत दूर **कूफ़े** में हुई लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की तदफ़ीन भी हुजरए मुत़ह्हरा में न हुई । जब नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल ह़ज़रते इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ज़ह्र दे कर शहीद किया गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की तदफ़ीन हुजरए मुक़द्दसा में करने की कोशिश हुई तो उस वक़्त **मदीनए मुनव्वरा** का गवर्नर मरवान जो कि अहले बैत का मुख़ालिफ़ था, मुसल्लह़ हो कर आड़े आया चुनान्चे ख़ूनीं तसादुम से बचने के लिये ह़ज़रते इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की तदफ़ीन जन्नतुल बक़ीअ़ में कर दी गई ।

*वोह ह़सने मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया  राकिबे दोशे इ़ज़्ज़त पे लाखों सलाम*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 309)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## हुजरए मुबारका का दरवाज़ा बन्द कर दिया गया

सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़, मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का जब विसाल हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا को जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किया गया और हुजरए मुत़ह्हरा के दरवाज़ए मुबारका के बाहर एक मज़्बूत़ दीवार खड़ी कर के उस में दाख़िले का रास्ता बन्द कर दिया गया । उम्मुल मुअमिनीन

رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के विसाल के बा'द वोह जगह भी ख़ाली हो गई जहां आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا क़ियाम पज़ीर थीं, यूं अब हुजरए मुनव्वरा में चौथी क़ब्र की जगह ख़ाली है। क़ुर्बे क़ियामत में ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَیۡہِ السَّلَام का नुज़ूल होगा और बा'दे इन्तिक़ाल आप عَلَیۡہِ السَّلَام की तदफ़ीन हुजरए पाक में की जाएगी।

## हुजरए मुबारका की दीवारों की ता'मीर

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी के दौर में मकाने आ़लीशान की दीवारें पक्की न थीं, सब से पहले अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने पक्की दीवारें ता'मीर करवाईं, फिर पहली सदी के मुजद्दिद ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने पहली सदी हिजरी में जब मस्जिदे नबवी शरीफ़ की ता'मीरे नौ की तो सियाह पथ्थरों से (बिग़ैर दरवाज़े के) दीवारें बना कर **हुजरए आ़इशा** का अस्ली रक़्बा मह़फ़ूज़ कर दिया और उस के गिर्द पंजगोशा (या'नी पांच कोने वाली) दीवार ता'मीर करवा दी जिस में कोई दरवाज़ा नहीं है।

## जाली मुबारक की तारीख़

**मक़्सूरा शरीफ़** लोहे और पीतल की उस जाली मुबारक को कहा जाता है जिसे क़ुबूरे मुबारका के अत़राफ़ में ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की ता'मीर कर्दा पंजगोशा (पांच कोनी) दीवार के इर्द गिर्द नस्ब किया गया है। सब से पहले मिस्री सुल्त़ान रुक्नुद्दीन बैबर्स ने 668 हि. में लकड़ी की जाली मुबारक बनाई थी, उस वक़्त उस की बुलन्दी दो आदमियों के क़द के बराबर थी। फिर शाह ज़ैनुद्दीन

कत्बुग़ा ने 694 हि. में इस के ऊपर मज़ीद जाली बढ़ा दी जो छत से जा लगी। 886 हि. में आतश ज़दगी के हादिसे में येह जाली मुबारक शहीद हो गई तो सुल्तान क़ायित्बाई ने लोहे और पीतल की जालियां तय्यार करवाईं जिन में से पीतल की जालियां जानिबे क़िब्ला जब कि लोहे की जालियां बक़िय्या तीनों अत्राफ़ में नस्ब की गईं। मक़्सूरा (जाल) शरीफ़ में कई दरवाज़े हैं : एक क़िब्ले की दीवार में जिस का नाम बाबुत्तौबा है, एक मग़्रिबी दीवार में जिसे बाबुल वुफ़ूद कहते हैं, एक मशरिक़ी दीवार में जिस का नाम बाबे फ़ातिमा है और एक शिमाली जानिब जिसे बाबुत्तहज्जुद कहते हैं। बाबे फ़ातिमा के इलावा तमाम दरवाज़े बन्द ही रहते हैं, बाबे फ़ातिमा भी उसी वक़्त खोला जाता है जब कोई गवर्नमेन्ट का मेहमान या वफ़्द आए, येह लोग अगर्चे मक़्सूरा शरीफ़ या'नी जाली मुबारक में दाख़िल तो हो जाते हैं लेकिन पंजगोशा दीवार के अन्दर नहीं जा सकते क्यूंकि इस में दाख़िले का कोई दरवाज़ा ही नहीं है। पंजगोशा के इर्द गिर्द बड़े बड़े पर्दे आवेज़ां हैं।

## तीन क़ब्रों की नक़्ली तसावीर

आज कल तीन क़ब्रों की तसवीर वाले तुग़रे बाज़ार में बिकते हैं, जिस में एक क़ब्र सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दो क़ब्रें शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا की त़रफ़ मन्सूब की हुई हैं, येह जा'ली (नक़्ली) हैं क्यूंकि तीनों मुबारक क़ब्रें पंजगोशा दीवारों के अन्दर हैं और अन्दर हाज़िर होने का कोई रास्ता ही नहीं। जब ज़ाहिरी आंखों से इन मुबारक क़ब्रों की ज़ियारत मुमकिन ही नहीं तो येह तसवीरें कहां से और किस त़रह़ उतारी गईं ?

*हिज्रो फ़िराक़ में जो या रब्ब ! तड़प रहे हैं उन को दिखा दे मौला मीठे नबी का रौज़ा*

(वसाइले बख़्शिश, स. 299)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## रौज़ए अन्वर पर गुम्बदे अत़हर की ता'मीर

हुजरए मुबारका पर पहले किसी क़िस्म का गुम्बद न था, छत पर सिर्फ़ निस्फ़ क़दे आदम (या'नी आधे इन्सानी क़द) के बराबर चार दीवारी थी ताकि जो कोई भी किसी ग़रज़ से मस्जिदे नबवी शरीफ़ की छत पर जाए उसे एह़सास रहे कि वोह निहायत अदब के मक़ाम पर है और कहीं भूल में भी उस पर न चढ़े। यहां येह बयान करना दिलचस्पी से ख़ाली नहीं कि अ़ब्बासी ख़िलाफ़त के इब्तिदाई दौर में मुक़्तदर शख़्सय्यात के मज़ारात पर गुम्बद बनाने का सिल्सिला हुवा और फिर देखते ही देखते बग़दाद शरीफ़ और दिमश्क़ में गुम्बद दीनी शख़्सय्यात के मज़ारात का बा क़ाइ़दा ह़िस्सा बन गया। बग़दाद शरीफ़ में इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर भी गुम्बद सल्जूक़ी सुल्त़ान मलिक शाह ने पांचवी सदी में ता'मीर करवाया था। इस के बा'द इस त़र्ज़े ता'मीर को मिस्र में ख़ूब रवाज मिला और वहां थोड़े ही अ़र्से में बहुत से मज़ारात पर गुम्बद बन गए। जब क़लावून ख़ानदान का दौर आया तो गुम्बद तक़रीबन तमाम मुस्लिम अ़लाक़ों में आ़म हो चुका था। मिस्र में चूंकि येह फ़न्ने ता'मीर बहुत मक़्बूल था इस लिये सुल्त़ान मन्सूर क़लावून ने जब रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **पहली मरतबा गुम्बद** बनवाने का फ़ैसला किया तो मिस्री मे'मारों की ख़िदमात ह़ासिल की गईं जिन्हों ने अपने हुनर को काम में लाते हुए

**678 हिजरी में हुजरए मुत़ह्हरा पर लकड़ी के तख़्तों की मदद से ख़ूबसूरत गुम्बद बनाया ।** रौज़ए रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत ने इस गुम्बद शरीफ़ को ऐसा हुस्न बख़्शा कि ज़ाइरीने मदीना की आंखों का तारा बन गया ।

*इलाही तू अ़त़ा कर दे हमें भी घर मदीने में वसीला तुझ को बू बक्रो उ़मर, उ़स्मानो ह़ैदर का*

(वसाइले बख़्शिश, स. 404)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## बड़े और छोटे गुम्बद शरीफ़ की ता'मीर

**पहला** गुम्बद शरीफ़ तक़रीबन एक सदी तक आ़शिक़ाने रसूल की आंखें ठन्डी करता रहा । फिर वक़्त गुज़रने के साथ साथ सीसा पिलाए हुए लकड़ी के तख़्तों में से चन्द तख़्ते "ज़ईफ़" हो गए, चुनान्चे सुल्त़ान नासिर ह़सन बिन मुह़म्मद क़लावून ने गुम्बद शरीफ़ की कुछ ख़िदमत की, फिर बा'द में सुल्त़ान अशरफ़ शा'बान बिन हुसैन बिन मुह़म्मद ने 765 हिजरी में मज़ीद ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल की । अभी एक सदी और गुज़री होगी कि इस बात की ज़रूरत मह़सूस हुई कि गुम्बद शरीफ़ की वसीअ़ बुन्यादों पर "ख़िदमत" या ता'मीरे नौ की जाए और साथ ही उस पंजगोशा इह़ाते की भी "ता'मीरी ख़िदमत" की जाए जो ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बनवाया था । सुल्त़ान अशरफ़ क़ायित्बाई ने अव्वलन अपने एक नुमाइन्दे को इस की तह़क़ीक़ात पर मामूर किया । नुमाइन्दे की रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ हुजरए मुत़ह्हरा की दीवारों की "ख़िदमत" की अशद् ज़रूरत थी और ख़ास त़ौर पर पंजगोशा शरीफ़ की शर्क़ी (EAST) दीवार की भी कि इस में

कुछ दराड़ें पड़नी शुरूअ़ हो गई थीं। चुनान्चे 14 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 881 सिने हिजरी को पंजगोशा शरीफ़ के मुतअस्सिरा हिस्से निकाल लिये गए, साथ ही साथ हुजरए मुत़ह्हरा की पुरानी छत शरीफ़ भी हटा ली गई और शर्क़ी जानिब तक़रीबन एक तिहाई हिस्से पर छत डाल दी गई जिस से येह एक तहख़ाने की मानिन्द नज़र आने लगा, जब कि बाक़ी के दो तिहाई हिस्से पर छत की तरकीब नहीं की गई बल्कि इस के ऊपर तीनों मुबारक क़ब्रों के सिरहानों की जानिब मुनक़्क़श पथ्थरों से बना हुवा एक छोटा सा मगर अ़ज़मत में बहुत बड़ा गुम्बद हुजरए पाक पर ता'मीर कर दिया गया उस के ऊपर सफ़ेद संगे मरमर लगाया गया और पीतल का हिलाल (चांद) नस्ब कर दिया गया। उस के ऊपर मस्जिदे नबवी शरीफ़ की छत को मज़ीद बुलन्द कर दिया गया ताकि येह छोटा गुम्बद अपने हिलाल (चांद) समेत मस्जिदे करीम की छत शरीफ़ के नीचे आ जाए। फिर उस के ऊपर बड़ा गुम्बद शरीफ़ ता'मीर किया गया। 17 शा'बान शरीफ़ 881 हिजरी को हुजरए मुत़ह्हरा की "ख़िदमत" और ता'मीरे नौ का काम शुरूअ़ हुवा और दो माह में मुकम्मल हुवा, येह काम 7 शव्वालुल शरीफ़ 881 हिजरी को ख़त्म हुवा। सुल्त़ान क़ायित्बाई मुअर्रख़ा 22 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम 881 हि. को मदीनतुल मुनव्वरा ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने उसी मक़ाम से ह़ाज़िरी दी जहां से अ़वामुन्नास खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करते हैं (या'नी जाली मुबारक के सामने खड़े हो कर मुवाजहा शरीफ़ के सामने से) जब उन्हें जाली मुबारक के अन्दर दाख़िल होने की अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाने लगे :

मैं इस क़ाबिल कहां ! अगर मुमकिन होता तो मैं मुवाजहा शरीफ़ से भी दूर खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करता।

*न हम आने के लाइ़क़ थे न क़ाबिल मुंह दिखाने के मगर उन का करम बन्दा नवाज़ व बन्दा परवर है*

(ज़ौक़े ना'त, स. 250)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## मोअज़्ज़िन पर दौराने अज़ान आस्मानी बिजली गिरी

13 रमज़ान शरीफ़ 886 हिजरी को आस्माने मदीना का मत़लअ़ अब्र आलूद था, मोअज़्ज़िन साहिब ह़स्बे मा'मूल मीनारए रईसिया पर अज़ान देने की ग़रज़ से चढ़े ही थे कि अचानक उन पर बिजली गिरी, मोअज़्ज़िन साहिब मौक़अ़ पर ही शहीद हो गए और मीनारए रईसिया मस्जिदे नबवी शरीफ़ की जानिब गिर पड़ा, मस्जिदे करीम में आग भड़क उठी, ना गहानी आग की लपेट में आ कर और भगदड़ वग़ैरा में मज़ीद दस आदमी फ़ौत हुए, आग और मीनारे के गिरने से गुम्बद शरीफ़ को भी "सदमा" पहुंचा और कुछ मल्बा हुजरए मुत़ह्हरा के अन्दर भी ह़ाज़िरी के लिये जा पहुंचा, ता हम हुजरए शरीफ़ा "सदमे" से महफ़ूज़ रहा, अगर्चे फ़ौरी नौइय्यत की "ता'मीरी ख़िदमत" तो करवा दी गई मगर मुकम्मल तफ़्सीलात के साथ सुल्त़ान क़ायित्बाई को 16 रमज़ान शरीफ़ को क़ासिद के ज़रीए पैग़ाम भेज दिया गया। सुल्त़ान ने मिस्र से ज़रूरी सामान और एक सो से ज़ियादा मे'मार कारीगर और मज़दूर मदीनतुल मुनव्वरा रवाना कर दिये। काम शुरूअ़ कर दिया गया, बाहर वाला गुम्बद शरीफ़ जिस को बहुत ज़ियादा "सदमा" पहुंचा था मुकम्मल त़ौर पर हटा लिया गया, सुल्त़ान क़ायित्बाई के हुक्म

से 892 सिने हिजरी में बाहर की जानिब एक नया गुम्बद शरीफ़ ता'मीर किया गया जो कि सदियों तक क़ाइम रहा।

## सब्ज़ गुम्बद कब बनाया

किसी ज़रूरत की वजह से तुर्की सुल्तान महमूद बिन अ़ब्दुल हमीद ख़ान ने सुल्तान क़ायित्बाई का बनवाया हुवा गुम्बद शरीफ़ शहीद करवा कर 1233 हिजरी में दोबारा गुम्बद ता'मीर करवा दिया। 1253 हि. मुताबिक़ 1837 ई. में इसे **सब्ज़ रंग** कर दिया गया और इस के सब्ज़ रंग की वजह से इसे **गुम्बदे ख़ज़रा** कहा जाता है। इस में 67 रौशन दान हैं, जिन में से कुछ तो गोल शक्ल के हैं और बाक़ी मुस्तती़ल (या'नी लमचौरस) हैं।

*गुम्बदे ख़ज़रा ख़ुदा तुझ को सलामत रखे  देख लेते हैं तुझे, प्यास बुझा लेते हैं*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## दोनों गुम्बदों में एक छोटा सा सूराख़ रखा गया

निचले गुम्बद शरीफ़ के ऊपर एक ऐसा सूराख़ रखा गया है जिस से क़ब्र शरीफ़ और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ हाइल नहीं रहती, उस पर एक बारीक जाली लगाई गई है ताकि उस में कबूतर वग़ैरा दाख़िल न हो सकें। और बिल्कुल इसी त़रह़ उस के ऐ़न ऊपर गुम्बदे ख़ज़रा में जुनूब की सम्त हिलाल (चांद) के नीचे भी सूराख़ रखा गया था, जब कभी क़ह़त़ का सामना होता अहले मदीना इस रौज़न (सूराख़ शरीफ़) को खोल दिया करते थे, जूंही धूप की किरनें हुजरए मुत़ह्हरा के अन्दर हाज़िरी की सआ़दत पातीं, बादल पानी ले कर हाज़िर

हो जाते और अहले मदीना के लिये ख़ूब बाराने रह़मत बरसाते। अब उसे बन्द कर दिया गया है।

*बादल घिरे हुए हैं बारिश बरस रही है लगता है क्या सुहाना मीठे नबी का रोज़ा*

(वसाइले बख़्शिश, स. 299)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## गुम्बद शरीफ़ के मुख़्तलिफ़ रंग

**गुम्बद** शरीफ़ के मुख़्तलिफ़ अदवार में मुख़्तलिफ़ रंगों की वजह से उसे इन रंगों की निस्बत से शोहरत रही है, मसलन जब उस का रंग सफ़ेद था तो उसे "कुब्बतुल बैज़ा" कहते, जब नीला रंग हुवा तो उसे "कुब्बतुज़्ज़रक़ा" कहने लगे, और फिर 1253 हि. मुत़ाबिक़ 1837 ई. से अब तक येह **सब्ज़ रंग** की वजह से "**कुब्बतुल ख़ज़रा**" (या'नी सब्ज़ गुम्बद) के नाम से मश्हूर है। येह निहायत दिल आवेज़, बहुत ही प्यारा और आ़शिक़ाने रसूल की आंखों का तारा है, दुन्या भर के आ़शिक़ाने रसूल इस से बेह़द मह़ब्बत करते हैं और इस की एक अ़लामत येह भी है कि दुन्या भर की बे शुमार मस्जिदों के गुम्बद "**गुम्बदे ख़ज़रा**" की याद में सब्ज़ रंग के बनाए जाते हैं। बा'ज़ मसाजिद पर तो गुम्बदों की शक्लो शबाहत और सब्ज़ रंगत में काफ़ी मुशाबहत (या'नी यक्सानिय्यत) देखी जाती है जिस की एक मिसाल मस्जिदे कन्ज़ुल ईमान पर बना हुवा **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** है।

*कैसा है प्यारा प्यारा येह सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद कितना है मीठा मीठा मीठे नबी का रौज़ा*

(वसाइले बख़्शिश, स. 298)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## मस्जिदे नबवी के 8 सुतूने रह़मत

मस्जिदे नबवी शरीफ़ के रह़मतों भरे आठ सुतूनों को ख़ुसूसी फ़ज़ीलत ह़ासिल है, इन पर इन के नाम भी लिखे हुए हैं और रौज़तुल जन्नह (या'नी जन्नत की क्यारी) के अन्दर 6 सुतूनों की ज़ियारत मुमकिन है, दो सुतून चूंकि अब हुजरए मुत़ह्हरा के अन्दर हैं लिहाज़ा उन की ज़ियारत मुश्किल है। सुतून को अ़रबी में "उस्तुवाना" कहते हैं। आठों उस्तुवानात की तफ़्सील येह है :

### ﴾1﴿ उस्तुवानए ह़न्नाना

**येह** सुतूने रह़मत सीधी जानिब मेह़राबे नबवी से बिल्कुल मिला हुवा है। "मिम्बरे मुनव्वर" बनने से पहले सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खजूर के एक तने से टेक लगा कर ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाते थे। जब मिम्बरे अत़्हर बनाया गया और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया तो वोह **तना** आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़िराक़ (या'नी जुदाई) में फट गया और चीख़ें मार कर रोने और गाभन (या'नी ह़ामिला) ऊंटनी की त़रह़ चिल्लाने लगा, येह ह़ाल देख कर तमाम ह़ाज़िरीन भी बे इख़्तियार रोने लगे। सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे मुनव्वर से उतर कर उस **खजूर के तने** पर दस्ते अन्वर फेर कर फ़रमाया : "तू चाहे तो तुझे तेरी जगह छोड़ दूं जिस ह़ालत में तू पहले था, अगर तू चाहे तो जन्नत में लगा दूं ताकि जन्नती तेरा फल खाते रहें," लम्ह़े भर के बा'द **सरकारे नामदार** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "इस ने जन्नत इख़्तियार की।" इसी रोने की वजह से उस

तने का नाम "ह़न्नाना" पड़ गया। **ह़ज़रते ह़सन बसरी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब येह वाक़िआ़ सुनते तो ख़ूब रोते और फ़रमाते : ऐ लोगो ! जब खजूर का एक बे जान तना फ़िराक़े रसूल में रो सकता है तो क्या तुम नहीं रो सकते ? (وفاء الوفاء، 1/388، 389، 390، 439)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## ﴾2﴿ उस्तुवानए आ़इशा

**येह** सुतूने रह़मत रौज़ए अन्वर से तीसरे नम्बर पर है और मिम्बरे मुनव्वर से भी तीसरे नम्बर पर। रह़मते अनाम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने और कई अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने यहां बारहा नमाज़ पढ़ी है और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यहां अक्सर तशरीफ़ रखा करते थे। (وفاء الوفاء، 1/441)

## अगर लोगों को पता लग जाए तो कुर्आ़ अन्दाज़ी करें

तमाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मी जान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने एक मरतबा मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ख़ुश गवार बयान किया : "मस्जिदे नबवी शरीफ़ में एक जगह बहुत ज़ियादा बा बरकत है, अगर लोगों को इ़ल्म हो जाए तो उन्हें वहां नमाज़ पढ़ने के लिये हुजूम की वजह से कुर्आ़ डालना पड़े !" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से वोह जगह दर्याफ़्त करना चाही मगर उन्हों ने बताने से पहलू तही की, बा'द अज़ां ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ عَنْه के इसरार पर उन्हों ने जगह की निशानदेही फ़रमा दी जिस पर मौसूफ़ फ़ौरन वहां पहुंचे और नफ़्ल पढ़ने में मसरूफ़ हो गए। इस त़रह़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को भी

उस **सुतूने रह़मत** का इ़ल्म हो गया। इसी वजह से उसे "उस्तुवानए आ़इशा" कहा जाता है। एक रिवायत के मुत़ाबिक़ येह जगह दुआ़ की क़बूलिय्यत के लिये ख़ुसूसी अहमिय्यत रखती है। (وفاء الوفاء، 1/440)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## ﴿3﴾ उस्तुवानए तौबा

**येह** सुतूने रह़मत क़ब्रे अन्वर से दूसरे और मिम्बरे मुनव्वर से चौथे नम्बर पर है। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर यहां नफ़्ल अदा फ़रमाते थे। मुसाफ़िर या मेहमान भी यहां आ कर ठहरते थे। इसी जगह तशरीफ़ फ़रमा हो कर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ुक़रा व मसाकीन ह़ज़रात में क़ुरआने करीम की ता'लीम और इस्लामी अह़काम की तरबियत फ़रमाते थे। इस सुतूने रह़मत का दूसरा नाम "उस्तुवानए अबू लुबाबा" है। ब ग़रज़े क़बूले तौबा ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अपने आप को इसी सुतूने रह़मत के साथ बंधवा दिया था और क़सम खा ली थी कि जब तक रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मुबारक हाथों से आज़ाद नहीं फ़रमाएंगे न इस क़ैद से निकलूंगा न खाऊंगा न पियूंगा। उन्हें सिर्फ़ नमाज़ों और त़बई ह़ाजतों के लिये खोला जाता, वोह तक़रीबन सात दिन बंधे रहे न कुछ खाया न पिया, फिर **अल्लाह** पाक ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई और आक़ाए नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपने दस्ते पुर अन्वार से खोला। (وفاء الوفاء، 1/442، 445)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## ﴾4﴿ उस्तुवानतुस्सरीर

**येह** सुतूने रह़मत उस्तुवानए तौबा की मशरिक़ी जानिब जाली मुबारक से मिला हुवा है। जब ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ के लिये मस्जिदे नबवी शरीफ़ में क़ियाम फ़रमाते तो कभी इसी जगह **सरीर** या'नी चारपाई बिछाते जो खजूर की शाख़ों से बनी हुई थी। और अक्सर रात को **ह़सीर** या'नी चटाई पर इस्तिराह़त (या'नी आराम) फ़रमाते। (وفاء الوفاء، 1/447۔ جذب القلوب، ص93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## ﴾5﴿ उस्तुवानतुल ह़रस

**इसे** "उस्तुवानतुल ह़रस" और "उस्तुवानए अ़ली" भी कहते हैं। ह़ज़रते मौला अ़ली मुश्किल कुशा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه अक्सर यहां नवाफ़िल अदा फ़रमाते और रातों को मह़बूबे बारी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पहरेदारी की ख़िदमात अन्जाम देते। (وفاء الوفاء، 1/449، 448)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## ﴾6﴿ उस्तुवानए वुफ़ूद

येह सुतूने रह़मत उस्तुवानतुल ह़रस के पीछे वाक़ेअ़ है। जब कभी गिर्दो नवाह़ से वुफ़ूदे अ़रब क़बूले इस्लाम के लिये दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर होते तो हमारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर इसी मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर उन को अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाते और सह़ाबए किबार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इर्द गिर्द बैठते। (وفاء الوفاء، 1/449)

*इक सम्त अ़ली इक सम्त उ़मर, सिद्दीक़ इधर उ़स्मान उधर*

*इन जगमग जगमग तारों में, महताब का आ़लम क्या होगा*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## ﴾7﴿ उस्तुवानए जिब्राईल

**ह़ज़रते** जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام अक्सर यहीं वह़ी ले कर नाज़िल होते। येह सुतूने मुबारक सय्यिदा बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के ह़ुजरए पाक से मुत्तसिल और "सुफ़्फ़ा शरीफ़" के ठीक सामने या'नी क़िब्ले की सम्त सब्ज़ जाली मुबारक के अन्दर है। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 94)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## ﴾8﴿ उस्तुवानए तहज्जुद

**यहां** सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारहा **तहज्जुद** अदा फ़रमाई है, येह सुतूने रह़मत "सुफ़्फ़ा शरीफ़" के सामने जानिबे क़िब्ला ह़ुजरए फ़ातिमा ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के पीछे जानिबे शिमाल सब्ज़ जालियों के अन्दर है। (وفاء الوفاء، 452/1) बाहर क़ुरआने पाक रखने की अलमारियों के सबब ज़ियारत मुश्किल है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## दीगर सुतून भी मुतबर्रक हैं

मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मुतज़क्करा आठ सुतूने रह़मत बेशक अफ़्ज़ल तरीन हैं मगर दीगर सुतून मुबारक भी बल्कि सारी ही मस्जिद शरीफ़ मुतबर्रक है। क़दीम मस्जिदे नबवी के हर हर सुतून पर ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक नज़र पड़ी है और कोई भी उस्तुवाना (या'नी सुतून) ऐसा नहीं जहां सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने नमाज़ न पढ़ी हो। सह़ीह़ बुख़ारी में है : ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बड़े बड़े सह़ाबए किराम

عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को देखा है कि वोह मग़रिब के वक़्त सुतूनों की त़रफ़ सबक़त करते या'नी जल्दी जल्दी पहुंचते थे। (بخاری،1/187،حدیث:503)

*मे'राज का समां है कहां पहुंचे ज़ाइरो! कुर्सी से ऊंची कुर्सी इसी पाक घर की है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 217)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

## रौज़तुल जन्नह (जन्नत की क्यारी)

ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुजरए मुबारका (जिस में सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़ारे पुर अन्वार है) और मिम्बरे नूरबार (जहां आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया करते थे) का दरमियानी ह़िस्सा जिस का तूल (या'नी लम्बाई) 22 मीटर और अ़र्ज़ (चौड़ाई) 15 मीटर है। रौज़तुल जन्नह या'नी "जन्नत की क्यारी" है। चुनान्चे हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है: مَابَیۡنَ بَیۡتِیۡ وَمِنۡبَرِیۡ رَوۡضَۃٌ مِّنۡ رِّیَاضِ الۡجَنَّۃِ या'नी मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। (بُخاری،1/402،حدیث:1195) आ़म बोलचाल में लोग इसे "**रियाज़ुल जन्नह**" कहते हैं मगर अस्ल लफ़्ज़ "**रौज़तुल जन्नह**" है।

*येह प्यारी प्यारी क्यारी तेरे ख़ाना बाग़ की सर्द इस की आबो ताब से आतश सक़र की है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 211)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

## मेह़राबे नबवी

मस्जिदे नबवी शरीफ़ में ता दमे तह़रीर **चार मेह़राबें** अपने अन्वार लुटा रही हैं ﴿1﴾ मेह़राबुन्नबी ﴿2﴾ मेह़राबे उ़समानी ﴿3﴾ मेह़राबे तहज्जुद ﴿4﴾ मेह़राबे सुलैमानी। यहां सिर्फ़ **मेह़राबुन्नबी** का

ज़िक्र किया जाता है : तह़वीले क़िब्ला (या'नी क़िब्ले की तब्दीली) का हुक्म नाज़िल होने के बा'द 14 या 15 रोज़ तक **इमामुल अम्बिया** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिदे नबवी शरीफ़ में सुतूने आ़इशा के सामने खड़े हो कर इमामत फ़रमाते रहे फिर 15 **शा'बान शरीफ़** 2 हि. को "सुतूने ह़न्नाना" के मक़ाम को शरफ़े क़ियाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया, येह मेह़राब शरीफ़ इसी जगह पर का'बए मुशर्रफ़ा के "मीज़ाबे रह़मत" की सम्त बनी हुई है। हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ुलफ़ाए राशिदीन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दौरे ज़र्रीन में मेह़राब की मौजूदा अ़लामत राइज नहीं थी इस को पहली सदी के मुजद्दिद, ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के हुक्म से 88 हिजरी (706 ई.) में ईजाद किया और येह वोह "बिदअ़ते ह़सना" है जिसे तमाम उम्मत ने क़बूल किया और अब दुन्या भर की मसाजिद की ताक़ नुमा मेह़राबें ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ईजादे मुबारक से बरकतें लिये हुए हैं। इस से येह बात भी सीखने को मिली कि दौरे सह़ाबा में किसी चीज़ का न होना उसे ना जाइज़ नहीं कर देता, जैसे येही मुरव्वजा मेह़राब, संगे मरमर के मिम्बर, मसाजिद पर गुम्बद व मीनार, सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद व मीनार, क़ुबूरे औलिया पर इ़मारत व गुम्बद, ख़त्मे बुख़ारी, माइक पर अज़ान व ख़ुत्बा, अज़ान से क़ब्ल दुरूद शरीफ़ पढ़ना, हर साल जश्ने विलादत की धूमधाम, ग्यारहवीं शरीफ़, आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन वग़ैरा वग़ैरा।

*मेह़राबो मिम्बर और वोह हरयाली जालियां और मस्जिदे ह़बीब का जलवा नसीब हो*

(वसाइले बख़्शिश, स. 119)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

# मिम्बरे रसूल

**दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** ﷺ : ﴿1﴾ مِنْبَرِیْ عَلٰی حَوْضِیْ या'नी मेरा मिम्बर मेरे ह़ौज़ (या'नी ह़ौज़े कौसर) पर है। (بخاری، 1/403، حدیث:1196) मिम्बर शरीफ़ का वोह गोला जिसे रहमते आ़लम ﷺ थामा करते थे, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان (बरकत के लिये) उस पर हाथ फेरा करते थे। ﴿2﴾ مِنْبَرِیْ عَلٰی تُرْعَةٍ مِّنْ تُرَعِ الْجَنَّةِ (طبقات لابن سعد، 1/196) या'नी मेरा मिम्बर जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में वाक़ेअ़ है। (وفاء الوفاء، 1/426)

## अस्ल मिम्बरे मुनव्वर लकड़ी का था

सरकारे मदीना ﷺ के लिये सब से पहला मिम्बरे मुनव्वर 8 हिजरी में तय्यार किया गया था, उस के तीन ज़ीने थे। आप ﷺ मिम्बरे मुत़ह्हर पर रौनक़ अफ़रोज़ होते वक़्त तीसरे दरजे (या'नी ज़ीने) पर बैठते और दूसरे दरजे पर पांव मुबारक रखते थे। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ के मिम्बरे मुबारक का त़ूल (या'नी लम्बाई) दो हाथ, अ़र्ज़ (या'नी चौड़ाई) एक हाथ और हर ज़ीने की चौड़ाई एक बालिश्त थी। (جذب القلوب، ص90) दरमियान वाला ह़िस्सा जिस के साथ तकिया (या'नी टेक) लगाते थे वोह एक हाथ लम्बा और जिन ह़िस्सों पर ख़ुत़्बे के लिये बैठते वक़्त हाथ मुबारक रखते थे वोह एक बालिश्त और दो उंगल उंचे थे। (وفاء الوفاء، 1/400، 402) मिम्बरे मुनव्वर मुबारक के तीनों जानिब पांच लकड़ियां लगी होती थीं। मिम्बरे अत़्हर की येह कैफ़िय्यत हुज़ूरे अन्वर ﷺ के बा'द सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म, सय्यिदुना उ़समाने ग़नी और ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के ज़माने में भी क़ाईम

रही । (جذب القلوب، ص90) मौजूदा दौर के संगे मरमर के मिम्बर "दौरे सहाबा" में न होने के बा वुजूद जाइज़ हैं !

*छुप छुप के देखूं मिम्बरे अक़्दस की फिर बहार शायद कभी तो शाह का जलवा नसीब हो*

(वसाइले बख़्शिश, स. 119)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## मक़ामे अज़ाने बिलाल की निशान दही नहीं हो सकती

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** मस्जिदे नबवी शरीफ़ के अन्दर जन्नत की क्यारी में मौजूद मिम्बर शरीफ़ के ऐन सामने आठ सुतूनों पर क़ाइम संगे मरमर का ख़ूबसूरत चबूतरा है, इसे "मुकब्बिरिया" कहते हैं, इसी पर खड़े हो कर अज़ान व इक़ामत कही जाती है। येह याद रहे ! इस जगह पर ह़ज़रते बिलाल ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का अज़ान देना साबित नहीं। (جستجوئے مدینہ، ص518 ملخصاً) ह़ज़रते बिलाल ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहां खड़े हो कर अज़ान देते थे अब उस जगह की निशान दही दुश्वार है, इस की तारीख़ मुलाह़ज़ा हो : अह़कामे अज़ान के निफ़ाज़ के बा'द शुरूअ़ शुरूअ़ में ह़ज़रते बिलाल इब्ने रबाह़ मस्जिदे नबवी शरीफ़ के क़रीब वाक़ेअ़ एक ऊंचे मकान की छत पर तशरीफ़ ले जा कर अज़ान दिया करते थे मगर इस के बा'द इन के लिये लकड़ी का एक स्टूल बनवा दिया गया था जिस पर खड़े हो कर वोह उस वक़्त तक अज़ान देते रहे जब तक कि वोह आ़ज़िमे दिमश्क़ नहीं हुए। इस स्टूल को हुजरए उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) की छत पर रख दिया गया था जिस पर खड़े हो कर अज़ान दी जाती थी। इस के बा'द आले उ़मर फ़ारूक़ ने इसे सय्यिदुना ह़ज़रते बिलाल इब्ने

रबाह़ ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के तबर्रुक और आसार के तौ़र पर संभाल लिया था जो कि सदियों तक मह़फ़ूज़ रहा। कुत़बुद्दीन ह़नफ़ी (मुतवफ़्फ़ा 990 हिजरी) अपनी तारीख़े मदीना में तसदीक़ करते हैं कि उन के अय्याम में भी वोह स्टूल ह़ज़रते बिलाल ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के आसार के तौ़र पर मह़फ़ूज़ था फिर जब दारे आले उ़मर को एक मद्रसे में तह़वील कर दिया गया तब भी वोह मुतबर्रक आसार क़ाइमो दाइम रहा लेकीन बीसवीं सदी के शुरूअ़ में वोह गोशए गुमनामी में चला गया।

## सुफ़्फ़ा शरीफ़

सुफ़्फ़ा साइबान और साएदार जगह को कहते हैं। मस्जिदे नबवी शरीफ़ में बाबे जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से दाख़िल हों तो कुछ क़दम चलने के बा'द सीधे हाथ की जानिब सुफ़्फ़ा शरीफ़ अपने जल्वे लुटा रहा है। सुफ़्फ़ा ज़मीन से आधा मीटर बुलन्द है जब कि इस की लम्बाई 12 मीटर और चौड़ाई 8 मीटर है और इस के अत़राफ़ में तक़रीबन दो फ़ुट उंची पीतल की जाली का ख़ूबसूरत ह़िसार (या'नी जंगला) बना हुवा है, यहां ज़ाइरीन तिलावते क़ुरआने मुबीन भी करते हैं और नमाज़ भी पढ़ते हैं। येही वोह मक़ाम है जहां फ़ुक़राए मुहाजिरीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का एक गिरौह इस्लामी ता'लीम के ह़ुसूल और तत़हीरे क़ुलूब (या'नी दिलों की पाकीज़गी के ह़ुसूल) की ख़ातिर सुब्ह़ो शाम क़ियाम पज़ीर रहता था। इन की ता'दाद 70 और 400 के दरमियान रही है। **ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जब कहीं से **सदक़ा** ह़ाज़िर किया जाता तो अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के यहां भिजवा देते और अगर कहीं से हदिय्या (या'नी

तोह़्फ़ा व नज़राना) ह़ाज़िरे ख़िदमत होता तो ख़ुद भी तनावुल फ़रमाते और अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को भी शरीक फ़रमा लेते। इल्मे दीन के येह शाइक़ीन निहायत सादा और ग़रीब व मिस्कीन हुवा करते थे। इन्हीं में के एक मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान फ़रमाते हैं : मैं ने 70 अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को देखा कि उन के पास चादर तक न थी फ़क़त़ तहबन्द था या कम्बल जिसे अपनी गर्दन में बांध कर लटका लेते थे और वोह भी इस क़दर छोटा होता कि किसी की आधी पिन्डलियों तक पहुंचता और किसी के टख़नों तक और हाथ से इसे थामे रहते कि कहीं सित्र खुल न जाए। (بخاری،1/169،حدیث:442) सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान फ़रमाया करते थे : क़सम है उस ज़ाते पाक की जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! कि मैं बसा अवक़ात भूक की शिद्दत के बाइस अपना शिकम (या'नी पेट) और सीना ज़मीन पर लगा देता और बा'ज़ अवक़ात पेट पर पथ्थर बांध लेता ताकि सीधा खड़ा हो सकूं। (بخاری،4/234،حدیث:6452) जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन इल्मे दीन के आ़शिक़ीन की ह़ौसला अफ़ज़ाई करते हुए अपने वज्द आफ़रीन कलिमात से नवाज़ते हुए उन से फ़रमाया : अगर तुम्हें मा'लूम हो जाए कि रब्बे काइनात ने तुम्हारे लिये कैसे कैसे इन्आ़मात तय्यार कर रखे हैं तो तुम तमन्ना करते कि काश ! फ़क़्रो फ़ाक़े का येह सिलसिला और त़वील हो जाए। (ترمذی،4/162،حدیث:2375)

*जुस्तजू में क्यूं फिरें माल की मारे मारे  हम तो सरकार के टुकड़ो पे पला करते हैं*

(वसाइले बख़्शिश, स. 144)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## अगले हफ़्ते का रिसाला